श्री आचाराङ्गसूत्र प्रथमश्रुतस्कन्ध प्रथम अध्ययनका

विषयानुक्रम

	विषय–	पृष्ठाङ्क–
१	मङ्गलाचरण	१– ३
२	अवतरणा	३–१५९
	(१) भगवान् के वचनों में कल्पवृक्ष के फूलों के पचीस (२५) गुणोंकी उपमा	४–१३
	(२) भगवान् की वाणी के ३५ अतिशय	१४–१९
	(३) अनुयोग (४)	२०–१५८
	(१) चरणकरणानुयोग	२०–२३
	(२) धर्मकथानुयोग	२३–२४
	(१) आक्षेपाण्यादिधर्मकथा (४)	२५–३१
	(२) धर्ममहिमा	३२–३४
	(३) गणितानुयोग	३५–५३
	प्रव्रज्यादानसमयनिर्णय	३६–५३
	(१) मासविचार	३७
	(२) पक्षविचार	३८
	(३) तिथिविचार	३८
	(४) वारविचार	३९
	(५) नक्षत्रविचार	३९
	(६) योगविचार	४१
	(७) करणविचार	४१
	(८) लग्नविचार	४६
	(९) ग्रहविचार	४६
	(१०) शीघ्रप्रव्रज्यासमयनिरूपण	४७

विषय–	पृष्ठाङ्क–
(११) केशलुञ्चन	५१
(१२) प्रथमगोचरीविचार	५२
(१३) नूतनपात्रव्यापारण	५३
(१४) आचार्यादिपदप्रदानसमय	५३
(४) द्रव्यानुयोग	५३–१५९
द्रव्यलक्षण	५४
पर्यायलक्षण	५८
द्रव्यविभाग (भेद–६)	६१
[१] धर्मास्तिकायस्वरूप	६३
[२] अधर्मास्तिकायस्वरूप	६७
[३] आकाशास्तिकायस्वरूप	७२
[४] कालनिरूपण	८२
कालशब्दव्युत्पत्ति	८२
कालसिद्धि	८३
काललक्षण	८४
कालस्वरूप	८८
[५] पुद्गलास्तिकाय	९६
पुद्गलशब्दार्थ	९६
पुद्गललक्षण	९७
पुद्गलप्रदेशसंख्या	९८
पुद्गलक्षेत्रस्थिति	९८
पुद्गलभेद	१०४
परमाणुस्वरूप	१०५
स्कन्धस्वरूप और उसके भेद	१०८
परमाणुबन्धकारण	११२
परमाणुबन्धव्यवस्था–कोष्टक	१२१

विषय–	पृष्ठाङ्क–
[६] जीवास्तिकाय	१२२
जीवशब्दार्थ	१२२
जीव स्वरूप भाव और उसके भेद–५	१२४
(१) औपशमिक भाव	१२५
(२) क्षायिक भाव	१२६
(३) क्षायोपशमिक भाव	१२७
(४) औदयिक भाव	१२७
(५) पारिणामिक भाव	१२८
जीव का स्थितिक्षेत्र	१३०
जीव की ह्रास–वृद्धि	१३२
जीव की ऊर्ध्वगति	१३४
जीवलक्षण	१३५
इति जीवास्तिकाय	१४०
षड्द्रव्य विचार	१४१
जीवस्कन्ध विचार	१४३
षड्द्रव्यों का सक्रिय-निष्क्रिय विचार—	१४५
व्यवहारनय को लेकर षड्द्रव्य विचार—	१४७
षड्द्रव्यों के विषय में– कर्तृत्वाकर्तृत्वनिरूपण	१४७
व्यवहार नय–(६)	१४८
(१) शुद्धव्यवहार नय	१४८
(२) अशुद्धव्यवहार नय	१५०
(३) शुभव्यवहार नय	१५१
(४) अशुभव्यवहार नय	१५२

विषय–	पृष्ठाङ्क
(५) उपचरितव्यवहार नय	१५२
(६) अनुपचरितव्यवहार नय	१५४
जीव के स्वरूप में सदृश-विसदृश विचार	१५६
इति अवतरण सम्पूर्ण	१५९
सूत्र का उपक्रम	१५९
सूत्र प्रथम	१६०
'भग' शब्दार्थ	१६१
सूत्र द्वितीय (संज्ञा)	१६४–१९५
संज्ञा के भेद (१६)	१६६
(१) आहारसंज्ञा	१६७
(२) भयसंज्ञा	१६९
(३) मैथुनसंज्ञा	१६९–१७०
(४) परिग्रहसंज्ञा	१७०
(५) क्रोधसंज्ञा	१७१
(६) मानसंज्ञा	१७१
(७) मायासंज्ञा	१७२
(८) लोभसंज्ञा	१७२
(९) लोकसंज्ञा	१७२–१७३
(१०) ओघसंज्ञा	१७३
(११) सुखसंज्ञा	१७३
(१२) दुःखसंज्ञा	१७४
(१३) मोहसंज्ञा	१७४
(१४) विचिकित्सासंज्ञा	१७४–१७५
(१५) शोकसंज्ञा	१७५
(१६) धर्मसंज्ञा	१७५–१७६
ज्ञानसंज्ञा के भेद–(५)	१७६

विषय–	पृष्ठाङ्क–
(१) मतिज्ञान	१७६
(२) श्रुतज्ञान	१७७
(३) अवधिज्ञान	१७९
(४) मनःपर्ययज्ञान	१८१
(५) केवलज्ञान	१८४
मतिज्ञान के भेद (५)	१८५–१९०
ईहा	१८५–१८६
अपोह	१८६–१८७
मीमांसा	१८७
मार्गणा	१८७
गवेषणा	१८८
संज्ञा	१८८
स्मृति	१८८–१८९
मति	१९०
प्रज्ञा	१९०
सूत्र तृतीय (संज्ञा)	१९५–२०२
तीन प्रकार का जन्म	१९८
(१) संमूर्च्छनजन्म	१९८–१९९
(२) गर्भजन्म	१९९–२००
(३) उपपातजन्म	२०१
सूत्र चतुर्थ (संज्ञा)	२०२–२०८
सूत्र पञ्चम	२०९–३९७
आत्मवादिप्रकरण	२१०–२६८
आत्मशब्दार्थ	२११
आत्मास्तित्वसिद्धि	२१३
आत्म का द्रव्यत्व	२२८
आत्माका स्वरूप (१३)	२३३

विषय–	पृष्ठांङ्क–
(१) जीवत्वनिरूपण	२३३
(२) नित्यत्वनिरूपण	२३७
(३) चेतनावत्त्वनिरूपण	२४३
(४) उपयोगवत्त्वनिरूपण	२४४
(५) परिणामित्वनिरूपण	२४७
(६) प्रभुत्वनिरूपण	२४८
(७) कर्तृत्वनिरूपण	२५०
(८) भोक्तृत्वसिद्धि	२५३
(९) शरीरपरिणामत्वसिद्धि	२५५
(१०) अमूर्त्तत्वनिरूपण	२५९
(११) प्रतिशरीरभिन्नत्वसिद्धि	२६३
(१२) पौद्गलिककर्मसयुक्तत्वसिद्धि	२६३
(१३) ऊर्ध्वगतिस्वभावत्वसिद्धि	२६८
इति आत्मवादि प्रकरण	२६८
लोकवादिप्रकरण	२६९–२९९
षड्जीवनिकाय	२७०–२७१
(१) पृथिवीकायभेद	२७१
(२) अप्कायभेद	२७३
(३) तेजस्कायभेद	२७४
(४) वायुकायभेद	२७४–२७५
(५) वनस्पतिकायभेद	२७५–२७६
(६) त्रसकायभेद	२७६
(–४) द्वित्रिचतुरिन्द्रियभेद	२७७–२७८
(६) पञ्चेन्द्रियभेद (४)	२७९
मनुष्यभेद	२८०
अकर्मभूमि	२८२
देवनिकाय (४)	२८३

विषय	पृष्ठाङ्क
(१) भवनपतिदेवभेद	२८४
(२) व्यन्तरदेवभेद	२८६
(३) ज्योतिष्कदेवभेद	२८७
(४) वैमानिकदेवभेद	२८८
कल्पातीत	२९४
षड्जीवनिकायभेदसंकलन	२९५
जीवसंख्या	२९८
कर्मवादिप्रकरण	२९९
(१) कर्मस्वरूप	३००
(२) कर्मसिद्धि	३०१
(३) कर्म का मूर्त्तत्व	३१२
(४) जीव और कर्म का संबन्ध	३१३
(५) कर्म का अनादित्व	३१७
(६) अकर्मवादिमतनिराकरण	३१८
(७) बन्धस्वरूपनिरूपण	३२०
(८) बन्धकारणनिरूपण	३२५
(१) प्रकृतिबन्ध	३३२
आठ कर्मों के लक्षण	३३३
(२) स्थितिबन्ध	३३४
स्थितिबन्धकोष्ठक	३३६–३३७
(३) अनुभावबन्ध	३३८
पुण्यपापकर्मनिरूपण	३४४
सर्वघाति प्रकृतियाँ (२०)	३४७
देशघाति प्रकृतियाँ (२५)	३५२
अघाति प्रकृतियाँ (७५)	३५६
उत्तरप्रकृतिसंख्या (१४८)	३५८–३७४

विषय–	पृष्ठाङ्क
कर्मक्षयविचार	३७४
इति कर्मवादिप्रकरण	३८३
क्रियावादिप्रकरण	३८३–३९७
प्राणातिपातक्रिया	३८६
मृगवध में उद्यत की क्रिया	३८८
कुसूल में लोह डालने वाले की क्रिया	३८९
धनुष से बींधने वाले की क्रिया	३९०
दृष्टिज्ञान के लिये हस्तादि– फैलाने वाले की क्रिया	३९१
ताड पर चढ कर उसके फल तोडनेवाले की क्रिया	३९२
अठारह पापस्थान	३९२–३९७
(१) प्राणातिपात	३९२
(२) मृषावाद	३९४
(३) अदत्तादान	३९४
(४) मैथुन	३९४–३९५
(५) परिग्रह	३९५
(६–१८) क्रोध से मिथ्यादर्शनशल्यतक	३९५–३९७
इति क्रियावादि प्रकरण	३९७
छठा सूत्र (कर्मसमारम्भ)	३९७–४०१
सूत्र सप्तम (अपरिज्ञात कर्मजीव)	४०२–४०३
सूत्र अष्टम (जीव का योनिसंधान)	४०३–४०९
योनिभेद (९)	४०४
चोरासी लाख योनियाँ	४०७
सूत्र नवम (परिज्ञा)	४०९
सूत्र दशम (कर्मसमारम्भ)	४११
सूत्र एकादश (उपसंहार)	४१५
सूत्रद्वादश (उपसंहार)	४१६

विषय–	पृष्ठाङ्क–
प्रथम अध्ययन के प्रथम उद्देशकी समाप्ति	४१७
दूसरे उद्देशका उपक्रम	४१८
जीव के विशिष्ट ज्ञानके अभावका कारण	४२०
पृथिवीकाय की हिंसा में तदाश्रित-	
जीवों की हिंसा	४२३
पृथिवीकायलक्षण	४२५
पृथिवीकायप्ररूपणा	४३३
पृथिवीकायजीवपरिणाम	४३७
पृथिवीकायवधद्वार–शस्त्रद्वार	४४०
पृथिवीकाय का उपभोग	४४१
पृथिवीकायसमारम्भप्रयोजन	४४२
पृथिवीकायसमारम्भफल	४४९
दृष्टान्तद्वारा पृथिवीजीवसिद्धि	४५५
पृथिवीकायसमारम्भनिवृत्ति	४६१
उपसंहार–उद्देशसमाप्ति–	४६३
तृतीय उद्देश	४६४
उपक्रम और दृष्टान्त	४६४–४६८
अनगारलक्षण	४६९
अनगारकर्त्तव्य	४७३
श्रद्धास्वरूप	४७४–४९८
(१) यथाप्रवृत्तिकरण	४८५
(२) अपूर्वकरण	४८९
(३) अनिवृत्तिकरण	४९२
(४) अधिगमश्रद्धा	४९४
अप्कायश्रद्धोपदेश	४९९–५०३
अप्काय की हिंसा में तदाश्रित अन्य जीवों की हिंसा	५०४
अप्कायशस्त्र	५०५
अप्कायरक्षोपदेश	५०९
अप्कायभोग–	५१२

विषय–	पृष्ठाङ्क–
अप्कायसचित्तता	५१४
अप्कायजीवलक्षण	५१९
अप्कायप्ररूपणा	५२०
अप्कायजीवपरिमाण	५२२
अप्कायशस्त्र	५२४
धावनजल–धावनपानी–(२१)	५२८
अप्कायविराधनादोष	५३०
अप्काय के विषय में अन्य-मत समीक्षा	५३२
अन्यमतागमविरोध	५३४
उपसंहार	४३७
चतुर्थोद्देशक	५३८
उपक्रम	५३८
अग्निकाय के अभ्याख्यान में आत्मा का अभ्याख्यान	५३९
अग्निकायलक्षण	५४१
अग्निकायसचित्तता	५४२
अग्निकायप्ररूपणा	५४३
अग्निकायजीवपरिणाम	५४६
अग्निकायापलाप	५४८
दीर्घलोकशस्त्र (अग्निकाय) का-खेदज्ञ	५५०
दीर्घलोकशब्दार्थ	५५३
अग्निकायशस्त्र	५५५
अग्निकायसमारम्भनिवृत्तिप्रतिज्ञा	५६०
अग्निविराधनादोष	५६२
अग्निकायोपभोग	५६७
अग्निसमारम्भदोष	५७०
अग्निसमारम्भ में उसके आश्रित अन्य जीवों की हिंसा	५७३
उपसंहार	५७९

विषय–	पृष्ठाङ्क–
उद्देशकसमाप्ति	५८१
पञ्चमोद्देशक (वनस्पति)	५८२
उपक्रम	५८२
अनगारलक्षण	५८४
वनस्पतिकायसचित्तता (लक्षणद्वार)	५८६
वनस्पतिप्ररूपणा (भेद)	५९१
वनस्पतिपरिमाण	६०९
वनस्पतिकायोपमर्दन संसार का हेतु है–	६१२
रूपादि गुण में मूर्च्छा संसार का कारण है–	६१७
रूपादिगुणमूर्च्छादोष	६२१
वनस्पतिशस्त्रसमारम्भ में तदाश्रित अनेक जीवहिंसा–	६२२
वनस्पतिविराधक साध्वाभास	६२६
उपभोगद्वार	६३०
वनस्पतिविराधनाफल	६३२
मनुष्यशरीर के साथ वनस्पति-की सचित्तता की सिद्धि–	६३६
उपसंहार	६४१
उद्देशसमाप्ति	६४३
षष्ठोद्देश (त्रसकाय)	६४४
उपक्रम	६४४
त्रसों के भेद	६४५
त्रसकायलक्षण	६५०
त्रसकायप्ररूपणा	६५१
त्रसकायपरिणाम	६५२
प्रत्येक त्रस जीवों के सुख दुःख अलग अलग हैं–	६५४

विषय-	पृष्ठाङ्क-
प्रत्येक दिशा विदिशा में पृथिवी आदि आश्रित त्रसजीवों को परिताप देने से संसार भ्रमण-	६५७
त्रसकाय के समारम्भ में अन्य प्राणियों की हिंसा	६५९
त्रसकाय की हिंसा में परिज्ञा (त्रसकायसमारंभदोष)	६६३
उपभोगद्वार	६६४
वेदनाद्वार	६६६
त्रसजीवविराधनाफल	६६७
त्रसजीवहिंसाप्रयोजन	६७०
उपसंहार	६७३
उद्देशसमाप्ति	६७५
सप्तम उद्देश (वायुकाय)	६७६
वायुकायविराधनविवेक	६७७
वायुकायलक्षण	६८३
वायुकायप्ररूपणा	६८४
वायुकायपरिमाण	६८५
वायुकायशस्त्र	६८६
वायुकाय की हिंसा में षड्जीव-निकायरूप लोक की हिंसा	६८९
द्रव्यलिङ्गिकृत वायुकायविराधना	६९०
वायुकायोपभोग	६९३
वायुविराधनादोष	६९६
वायुविराधनापरिहार	७००
मुखवस्त्रिकाविचार	७०४
षड्निकायारम्भदोष	७१२
षड्जीवविराधनापरिहार	७१७
प्रथम अध्ययन समाप्ति	७२०